Resource: मुख्य शब्द (Biblica)

Biblica Study Notes (Key Terms) © 2023 Biblica Inc. Released under CC BY-SA 4.0 license. Biblica Study Notes has been adapted in the following languages: Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文)from Biblica Study Notes © 2023 Biblica Inc. Released under CC BY-SA 4.0 license by Mission Mutual.

मुख्य शब्द (Biblica)

सव

स्वर्ग

बाइबल में स्वर्ग शब्द के दो अर्थ हैं। पहला अर्थ पृथ्वी के ऊपर का आकाश है। दूसरा अर्थ वह स्थान है जहाँ राजा और सृष्टिकर्ता परमेश्वर राज्य करते हैं। यह कोई निश्चित स्थान नहीं है जहाँ यात्रा की जा सके। यह वह स्थान है जहाँ परमेश्वर की उपासना होती है। परमेश्वर नई सृष्टि में स्वर्ग को पृथ्वी पर लाएंगे। लोग स्वर्ग को पूरी तरह से समझ या कल्पना नहीं कर सकते। (परमेश्वर का राज्य, नई सृष्टि)

स्वर्गदूत

परमेश्वर द्वारा भेजा गया एक संदेशवाहक। स्वर्गदूत लोगों को परमेश्वर के शब्द बताते हैं या पृथ्वी पर परमेश्वर के लिए काम करते हैं। स्वर्गदूत आत्मिक प्राणी होते हैं। वे मनुष्यों की तरह दिख सकते हैं लेकिन उनके पास मनुष्यों के शरीर जैसे शरीर नहीं होते। (आध्यात्मिक प्राणी)

स्वर्गीय दुनिया

अस्तित्व में मौजूद सभी आध्यात्मिक प्राणियों के बारे में बात करने का एक तरीका। यह कोई निश्चित स्थान नहीं है। स्वर्गीय संसार में वे आत्माऐ शामिल हैं जो परमेश्वर की सेवा करते हैं और इसमें दुष्टात्माऐ भी शामिल हैं। (आत्माऐ , दुष्टात्माऐ)। स्वर्गीय संसार को आत्मिक क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है। मनुष्य अपने आप स्वर्गीय संसार को देख, सुन या छू नहीं सकते। उनके द्वारा किए गए चुनावों का स्वर्गीय संसार पर प्रभाव पड़ता है। इसमें यह चुनाव शामिल है कि वे किसकी उपासना करते हैं और दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। यीशु के अनुयायियों की प्रार्थनाओं का भी स्वर्गीय संसार पर प्रभाव पड़ता है। जब परमेश्वर मनुष्यों को स्वर्गीय संसार में चीजें दिखाते हैं तो इसे दर्शन कहा जाता है।

स्वर्गीय नागरिक

लोग उस राष्ट्र के नागरिक होते हैं जहाँ वे रहते हैं या जहाँ उनका जन्म हुआ था। विश्वासी भी स्वर्ग के नागरिक होते हैं। इसका मतलब है कि वे परमेश्वर के हैं और उनके राज्य का हिस्सा हैं। यह सच है, भले ही वे पृथ्वी पर जीवित हों। परमेश्वर धीरे-धीरे विश्वासियों के माध्यम से पृथ्वी पर अपने राज्य का विस्तार करते हैं। स्वर्ग के नागरिक के रूप में, वे परमेश्वर के राज्य के संदेशवाहक होते हैं। (परमेश्वर का राज्य दानिय्येल 2:1–49)